ऊनविंश खण्ड

ठाकुर श्रीरामकृष्ण कलकत्ता नगर में
भक्त-मन्दिर में

प्रथम परिच्छेद

(शोकातुरा ब्राह्मणी के घर पर ठाकुर श्रीरामकृष्ण)

ठाकुर बागबाजार की एक शोकातुरा ब्राह्मणी के घर पर आए हैं। घर पुरानी ईंटों से बना हुआ है। घर में प्रवेश करते ही बायें हाथ गौशाला है। छत के ऊपर बैठने का स्थान बना है। छत पर लोग कतार बाँधकर कोई खड़ा हुआ है, कोई बैठा हुआ है। सब ही उत्सुक हैं कि कब ठाकुर को देखेंगे।

ब्राह्मणीहर दो बहनें हैं, दोनों जनी ही विधवा। घर में इनके भाई लोग सपरिवार रहते हैं। ब्राह्मणी की एकमात्र कन्या के देहत्याग करने से वह अपार शोकातुरा है। आज ठाकुर घर आएँगे, इसी कारण दिनभर से उद्योग कर रही हैं। जब तक ठाकुर श्रीयुक्त नन्दबसु की बाड़ी में थे, तब तक ब्राह्मणी घर-बाहर करती रही थी— कब वे आते हैं! ठाकुर ने कह दिया था कि वे नन्दबसु के घर से होकर उनके घर में आएँगे। विलम्ब होने से वे सोचती रही थीं, शायद अब ठाकुर नहीं आएँगे।

ठाकुर ने भक्तों के संग छत के ऊपर बैठने वाले स्थान पर आसन ग्रहण किया। निकट ही मादुर (बारीक चटाई) के ऊपर मास्टर, नाराण, योगीन सेन, देवेन्द्र, योगीन हैं। कुछ क्षण पश्चात् छोटे नरेन प्रभृति अनेक भक्तगण इकट्ठे हो गए। ब्राह्मणी की भगिनी छत के ऊपर आकर ठाकुर को प्रणाम करके कहती हैं— 'दीदी अभी गई हैं, नन्दबसु की बाड़ी में,

खबर लेने— क्यों इतनी देर हो रही है! अभी लौट आएँगी'।

नीचे एक शब्द होने पर वे फिर और कहती हैं— ''यही, दीदी आ रही हैं''— यह कहकर वे देखने लगीं। किन्तु वे अब भी नहीं आईं।

ठाकुर सहास्यवदन हैं, भक्तों से घिरे हुए बैठे हैं।

मास्टर *(देवेन्द्र के प्रति)*— कैसा सुन्दर (अद्‌भुत) दृश्य है! लड़के-बूढ़े, पुरुष-स्त्री कतार बाँधकर खड़े हुए हैं। सब ही हैं कितने उत्सुक— इन्हें देखने के लिए। और इनकी बातें सुनने के लिए।

देवेन्द्र *(श्रीरामकृष्ण के प्रति)*— मास्टर महाशय कहते हैं कि यह जगह नन्दबसु की अपेक्षा अच्छी है, इनकी कितनी भक्ति है!

ठाकुर हँस रहे हैं।

अब ब्राह्मणी की भगिनी कहती हैं, ''यही, दीदी आ रही हैं।''

ब्राह्मणी आकर ठाकुर को प्रणाम करके क्या कहेंगी, क्या करेंगी— कुछ भी ठीक कर नहीं पा रही हैं।

ब्राह्मणी अधीर होकर कह रही हैं,

''ओ जी, मैं तो आह्लाद (खुशी) से अब फिर बचूँगी नहीं जी! तुम सब बताओ मैं कैसे बचूँ! अजी, मेरी चण्डी जब आई थी, सिपाही-सन्तरी साथ लेकर— वे लोग रास्ते में पहरा देते थे— तब तो इतना हर्ष नहीं हुआ था। अजी, चण्डी का शोक अब ज़रा-सा भी मुझे नहीं है। सोच रही थी, ये जब आ ही नहीं रहे हैं, तो जो आयोजन किया है, सब गंगा के जल में फेंक दूँगी और उनके (ठाकुर के) संग बात भी नहीं करूँगी। जहाँ पर आएँगे, एक बार जाऊँगी, दूर से देखूँगी, देखकर चली आऊँगी।

''जाऊँ— सबको कहूँ, आओ, आओ! मेरा सुख देखो आकर! जाऊँ! जोगीन को कहूँ जाकर, मेरा भाग्य देख जा!''

ब्राह्मणी फिर और आनन्द में अधीर होकर कहती हैं—

''अजी, खेल (लॉटरी) में एक श्रमिक (कुली) ने एक रुपया देकर एक लाख रुपया पाया था। उसने ज्योंहि सुना एक लाख रुपया मिला है, त्योंहि

आह्लाद (हर्ष) से मर गया था, सचमुच मर गया था!— अजी, मेरा भी तो वही हुआ है जी! तुम सब आशीर्वाद करो, नहीं तो मैं सचमुच मर जाऊँगी।''

मणि ब्राह्मणी की आर्त्ति (मानसिक व्याकुलता) और भाव की अवस्था देख कर मोहित हो गए हैं। वे उनके पाँव की धूल लेने गए। ब्राह्मणी कहती हैं, 'यह क्या जी!' उन्होंने मणि को प्रति-प्रणाम किया।

ब्राह्मणी, भक्तगण आए हैं, देखकर आनन्दित हुईं हैं और कह रही हैं— ''तुम लोग सब आए हो— छोटे नरेन को लाई हूँ— कहा था, वह नहीं होगा तो हँसेगा कौन?'' ब्राह्मणी इस प्रकार बातें कर रही हैं। उसकी भगिनी आकर घबराई हुई कहतीं हैं, 'दीदी, आओ ना! तुम्हारे यहाँ खड़े रहने से क्या होगा? नीचे आओ! हम क्या अकेले कर सकते हैं?'

ब्राह्मणी आनन्द में विभोर हैं! ठाकुर और भक्तों को देख रही हैं। उन्हें छोड़कर तो फिर जा नहीं सकतीं।

इसी प्रकार कथावार्त्ता के पश्चात् ब्राह्मणी ने अतिशय भक्ति सहित ठाकुर को अन्य कमरे में ले जाकर मिठाई आदि निवेदन की। भक्तों ने भी, छत पर बैठकर— सबने मीठा मुख किया।

रात के प्राय: आठ हो गए हैं। ठाकुर विदा ग्रहण कर रहे हैं। नीचे के तल में कमरे के साथ बरामदा है। बरामदे से पश्चिमास्य होकर आँगन में आना होता है। उसके बाद गौशाला को दायें हाथ रखकर सदर द्वार पर आना होता है। ठाकुर जब बरामदे से भक्तों के संग बड़े फाटक की ओर आ रहे हैं, तब ब्राह्मणी उच्च स्वर में पुकरती हैं, 'ओ बहू, शीघ्र पाँव की धूल ले ले आकर!' बहूजी ने प्रणाम किया। ब्राह्मणी के एक भाई ने भी आकर प्रणाम किया।

ब्राह्मणी ठाकुर से कह रही हैं— 'यह और एक भाई है, मूर्ख!'

श्रीरामकृष्ण— ना, ना, सब भालो मानुष।

एक जन संग-संग प्रदीप लेकर आ रहे हैं। आते-आते एक-एक जगह पर वैसा आलोक नहीं हुआ।

छोटे नरेन उच्च स्वर में कह रहे हैं, 'पिद्दिम धर, पिद्दिम धर! मने

करो ना जे, पिद्दिम धरा फुरिये गेलो।' (प्रकाश लाओ, प्रकाश लाओ! मत सोचो कि प्रकाश दिखाना खत्म हो गया है।) *(सबका हास्य)*।

अब गौशाला। ब्राह्मणी ठाकुर से कहती हैं, यह है मेरी गौशाला। गौशाला के सामने एक बार खड़े हो गए। चारों ओर हैं भक्तगण। मणि भूमिष्ठ होकर ठाकुर को प्रणाम करते हैं और पाँव की धूल लेते हैं।

अब ठाकुर गणु की माँ के घर जाएँगे।

द्वितीय परिच्छेद

(गणु की माँ के घर में श्रीरामकृष्ण)

गणु की माँ की बाड़ी में बैठकखाने में ठाकुर श्रीरामकृष्ण बैठे हुए हैं। घर एक नीचे तल पर है, ठीक रास्ते के ऊपर। घर के भीतर ऐक्यतान वाद्य (concert) का अखाड़ा है। लड़के वाद्ययन्त्र लेकर ठाकुर की प्रीति के लिए बीच-बीच में बजा रहे हैं।

रात के साढ़े आठ हैं। आज आषाढ़ मास की कृष्णा प्रतिपदा है। चाँद के आलोक में आकाश, गृह, राजपथ— सब जैसे प्लावित हो रहे हैं। ठाकुर के संग-संग भक्तगण आकर उसी कमरे में बैठ गए हैं।

ब्राह्मणी भी संग-संग आई हैं। वे एक बार घर के भीतर जाती हैं, एक बार बाहर आकर बैठक के द्वार के पास आकर खड़ी हो जाती हैं। मुहल्ले के कितने ही लड़के बैठक की खिड़की के ऊपर चढ़कर ठाकुर को देखते हैं। मुहल्ले के लड़के-बूढ़े सब ही ठाकुर का आगमन-संवाद सुनकर उतावले होकर महापुरुष-दर्शन करने आए हैं।

खिड़की के ऊपर लड़के चढ़ते देखकर छोटे नरेन कह रहे हैं— अरे ओ, तुम वहाँ पर क्यों हो ? जाओ, जाओ, घर जाओ! ठाकुर श्रीरामकृष्ण सस्नेह कह रहे हैं, ''ना, रहो, रहो।''

ठाकुर बीच-बीच में कह रहे हैं, ''हरि ॐ! हरि ॐ!''

शतरंजी (दरी) के ऊपर एक आसन बिछाया हुआ है, उसके ऊपर श्रीरामकृष्ण बैठे हुए हैं। ऐक्यतान वाद्य के लड़कों से गाना गाने के लिए

कहा गया। उन्हें बैठने की सुविधा नहीं हो रही। ठाकुर ने अपने निकट शतरंजी पर बैठने के लिए उन्हें बुला लिया।

ठाकुर कह रहे हैं, ''इसके ऊपर ही बैठ जाओ ना! यह मैं लेता हूँ'', यह कहकर आसन समेट लिया। लड़के गाना गाते हैं —

केशव कुरु करुणादीने कुञ्ज काननचारी।
माधव-मनोमोहन मोहन-मुरलीधारी।
(हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, मन आमार)॥
ब्रजकिशोर कालीयहर कातर भय-भंजन,
नयन बाँका, बाँका शिखिपाखा, राधिका-हृदिरंजन;
गोवर्धन-धारण, बन-कुसुम-भूषण, दामोदर, कंसदर्पहारी।
श्याम-रास-रस-बिहारी।
(हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, मन आमार)॥

[भावार्थ— हे केशव! कुञ्ज-काननचारी, दीन पर करुणा करो। माधव मनोमोहन-मुरलीधारी! (हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, ऐ मन मेरे!) हे ब्रजकिशोर, कालीयहर, कातर-भय-भंजन, बांके नयन, बांके मोर पंख, राधिका के हृदय को खुश करने वाले; गोवर्धन-धारण, बनकुसुमभूषण, दामोदर (कृष्ण), कंस के दर्प को चूर्ण करने वाले, श्याम-रास-रसबिहारी! (हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, मन मेरे)॥]

गाना— ऐशो मा जीवन उमा... इत्यादि।
[आओ मेरी जीवन उमा...]

श्रीरामकृष्ण— आहा, क्या गाना है!— कैसा बेहाला (violin)! कैसा बाजा!

एक लड़का फ्लूट (बंसी) बजा रहा था। उनकी ओर तथा अन्य लड़के की ओर उंगली से निर्देश करके कह रहे हैं, 'यह और वह जैसे जोड़ी हैं'।

अब केवल कॉनसर्ट होने लगा। वाद्यों पर ठाकुर आनन्दित होकर कह रहे हैं— ''वाह! कैसा सुन्दर!''

एक लड़के को दिखाकर कह रहे हैं, ''उसको सब (बाजे) आते हैं।''

मास्टर से कह रहे हैं— ''ये सब अच्छे लोग हैं।''

लड़कों के गाने के बाद वे भक्तों से कह रहे हैं, ''आप लोग कुछ

गाएँ!'' ब्राह्मणी खड़ी हुई हैं। वे द्वार के निकट से बोलीं, गाना इनमें से कोई नहीं जानता, एक महिमबाबू शायद जानते हैं, किन्तु उनके (श्रीरामकृष्ण के) सामने वे नहीं गाएँगे।

एक छोकरा— क्यों? मैं बाबा के सामने गा सकता हूँ।

छोटे नरेन *(उच्च हास्य करके)*— इतनी आगे ये बढ़ते नहीं।

सब हँस रहे हैं। कुछ क्षण पश्चात् ब्राह्मणी आकर कह रही हैं— ''आप भीतर आइए।'' श्रीरामकृष्ण कहते हैं, ''क्यों जी?''

ब्राह्मणी— वहाँ पर जलपान दिया गया है, जाएँगे?

श्रीरामकृष्ण— यहाँ पर ही ला दो ना!

ब्राह्मणी— गणु की माँ कहती हैं, घर में एक बार पाँव की धूल दें, तो फिर घर काशी बना रहेगा। घर में मर जाने पर भी फिर कोई गड़बड़ नहीं रहेगी।

ठाकुर श्रीरामकृष्ण ने ब्राह्मणी और घर के लड़कों के संग अन्त:पुर में गमन किया। भक्तगण चाँद के आलोक में टहलने लगे। मास्टर और विनोद घर के दक्षिण वाले सदर मार्ग पर बातें करते-करते पादचारण कर रहे हैं।

तृतीय परिच्छेद

(गुह्य कथा— 'तीन जन ही एक')

बलराम के घर की बैठक के पश्चिम के साथ के कमरे में ठाकुर विश्राम कर रहे हैं, निद्रा करेंगे। गणु की माँ के घर से लौटते हुए अनेक रात हो गई है। रात के पौने ग्यारह होंगे।

ठाकुर कह रहे हैं,

''योगीन, तनिक पाँव पर हाथ सहला दो तो।''

निकट मणि बैठे हुए हैं।

योगीन पाँव पर हाथ फेर रहे हैं। इस समय ठाकुर कह रहे हैं,

"मुझे भूख लगी है, थोड़ी-सी सूजी खाऊँगा।"

ब्राह्मणी संग-संग यहाँ पर भी आ गई हैं। ब्राह्मणी का भाई बहुत सुन्दर बायाँ तबला बजा सकते हैं। ठाकुर ब्राह्मणी को फिर और देखकर कह रहे हैं,

"अबकी बार नरेन के आने पर या किसी भी और गाने वाले व्यक्ति के आने पर इनके भाई को भी बुलाना होगा।"

ठाकुर ने थोड़ी-सी सूजी खा ली। धीरे-धीरे योगीन आदि भक्तगण कमरे से चले गए। मणि ठाकुर के पैरों पर हाथ फेर रहे हैं। ठाकुर उनके साथ बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— आहा, इनका (ब्राह्मणीहर का) कितना आह्लाद!

मणि— कैसा आश्चर्य, यीशुक्राइस्ट के समय ठीक इसी प्रकार हुआ था! वे भी दो स्त्री भक्त थीं, दोनों बहनें— मार्था और मेरी।

श्रीरामकृष्ण *(उत्सुक होकर)*— उनकी क्या कहानी है, बताओ तो!

मणि—यीशुक्राइस्ट उनके घर में भक्तों के संग में ठीक इसी प्रकार गए थे। एक भगिनी उन्हें देखकर भावोल्लास में परिपूर्ण हो गई थी। जैसे गौर के गाने में है—

'डुबलो नयन फिरे ना एलो।
गौर रूपसागरे साँतार भुले, तलिए गेलो आमार मन।'

[डूब जाने पर नयन फिर लौटकर नहीं आए। गौर (चैतन्यप्रभु) के रूपसागर में तैरना भूलकर मेरा मन तले में चला गया।]

और एक बहिन अकेली खाने-पीने का उद्योग कर रही थी। उसने व्यतिव्यस्त (काम में फँसी) होकर यीशु के पास नालिश की— प्रभु, देखिए ना— दीदी का कैसा अन्याय! ये यहाँ पर अकेली चुप करके बैठी हुई हैं, और मैं अकेली यह समस्त उद्योग कर रही हूँ?

तब यीशु ने कहा, तुम्हारी दीदी ही धन्य हैं, क्योंकि मनुष्य-जीवन का जो प्रयोजन (अर्थात् ईश्वर में प्यार-प्रेम) है, वह उन्हें हो गया है।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, तुम्हें यह सब देखकर क्या बोध होता है?

मणि— मुझे बोध होता है, तीनों जन ही एक वस्तु हैं!— यीशुक्राइस्ट, चैतन्यदेव और आप— एक व्यक्ति!

श्रीरामकृष्ण— एक! एक के अतिरिक्त और क्या! वे (ईश्वर),— देख रहे हो ना— जैसे इसके ऊपर ऐसे किए हुए हैं!

यह कहकर ठाकुर ने अपने शरीर के ऊपर अंगुलि निर्देश की— जैसे कह रहे हैं कि ईश्वर अवतीर्ण होकर उनका ही शरीर धारण करके रह रहे हैं।

मणि— उस दिन आपने यही अवतार वाली बात अच्छे-से समझाई थी।

श्रीरामकृष्ण— बताओ तो, क्या?

मणि— जैसे दिग्-दिगन्तव्यापी मैदान पड़ा हुआ है! धू-धू कर रहा है! सम्मुख दीवाल है, इस कारण मैं देख नहीं पाता। उस दीवाल में केवल एक गोल फाँक (खाली स्थान) है! उसी छेद द्वारा अनन्त मैदान का तनिक-सा दिखाई देता है!

श्रीरामकृष्ण— बताओ तो वह 'फाँक' क्या है?

मणि— वह 'फाँक' आप हैं। आपके भीतर से सब दिखाई देता है।— वही दिग्-दिगन्त-व्यापी माठ (मैदान) दिखाई देता है।

श्रीरामकृष्ण अतिशय सन्तुष्ट होकर मणि का शरीर थपथपाने लगे और बोले, ''तुम जो उसे विशेष रूप से समझ गए हो!— बड़ा ही बढ़िया हुआ है।''

मणि— यही तो विशेष कठिन है। पूर्णब्रह्म होते हुए इस छोटे-से के भीतर कैसे करके रहते हैं, इसे ही तो समझा नहीं जाता।

श्रीरामकृष्ण— 'ताके केऊ चिनालि ना रे! ओ से पागलेर वेशे (दीनहीन कांगालेर वेशे) फिरछे जीवेर घरे घरे' (ओ, उसको तो किसी ने भी नहीं पहचाना भाई! वह जो पागल के वेष में जीव के घर-घर में फिर रहा है)।

मणि— और आपने यीशु की बात कही थी।

श्रीरामकृष्ण— कौन-सी, क्या?

मणि— यदुमल्लिक के बाग में यीशु की छवि देखकर भावसमाधि हो गई थी। आपने देखा था कि यीशु की मूर्ति छवि से आकर आपके भीतर मिल गई।

ठाकुर कुछ काल चुप रहे। तब फिर मणि से और कहते हैं,

''यही जो गले में यह हो गई है, इसका शायद कुछ अर्थ है। सब लोगों के निकट कहीं फिर हलकामी (हलकापन) न कर बैठूँ! और कुछ भी न हो, तो भी जहाँ-कहीं नाचना-गाना तो हो जाता है।''

ठाकुर द्विज की बात कहते हैं। कह रहे हैं,

''द्विज नहीं आया?''

मणि— आने के लिए कहा था। आज आने की बात तो थी किन्तु क्यों नहीं आया, कह नहीं सकता।

श्रीरामकृष्ण— उसका खूब अनुराग है। अच्छा, वह यहाँ का एक कोई होगा ना (अर्थात् सांगोपांगों के मध्य में एकजन होगा)!

मणि— जी हाँ, वही होगा, वह न हो तो इतना अनुराग!

मणि मसहरी के भीतर जाकर ठाकुर को हवा करते हैं।

ठाकुर थोड़ी करवट लेकर फिर और बातें कर रहे हैं। मनुष्य के भीतर वे अवतीर्ण होकर लीला करते हैं— यही बात होती है।

श्रीरामकृष्ण— तुम्हारा वही घर है। मुझे पहले रूप-दर्शन नहीं होता था, ऐसी अवस्था चली गई है। अब भी देखते हो कि नहीं, फिर दोबारा रूप कम हो रहा है।

मणि— लीला के मध्य में नर-लीला बड़ी अच्छी लगती है।

श्रीरामकृष्ण— वह होने पर ही हुआ। और मुझे देखते हो!

क्या ठाकुर श्रीरामकृष्ण कह रहे हैं कि मेरे भीतर ईश्वर नर-रूप में अवतीर्ण होकर लीला कर रहे हैं?